शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –01-04

वर्तमान समय में प्रासंगिक यथार्थवादी कथाकार : अमरकांत

सय्यद मखसूद
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविध्यालय
Mail id -maqsud014@gmail.com **मो.** 8142463434 **Orcid id**-0009-0001-0204-5398

Received- 07 April 2026
Accepted– 08May 2026
Published– 30June 2026
Corresponding Author-
सय्यद मखसूद- शोधार्थी, हिन्दी विभाग
हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविध्यालय
Mail id -maqsud014@gmail.com **मो.** 8142463434

DOI- https://doi.org/10.67275/SU.2026.041401

Funding Policy-
'Shodh Utkarsh' is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.
वित्त पोषण नीति-
'शोध उत्कर्ष' एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।

Copyright Notice -
© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).
कॉपीराइट सूचना-
© २०२६ लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।

OPEN ACCESS
Shodh Utkarsh
CC-BY 4.0

सारांश-
यह शोध-पत्र हिंदी साहित्य के प्रमुख यथार्थवादी कथाकार अमरकांत को वर्तमान समय की प्रासंगिकता के संदर्भ में विश्लेषित करता है। अमरकांत (1925-2014) का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के गाँव नगरा में हुआ। उनके जीवन की प्रारंभिक घटनाएँ, क्रांतिकारी विचारों से प्रभाव, गांधी-नेहरू-जयप्रकाश नारायण जैसे व्यक्तित्वों का असर और मध्यवर्गीय संघर्षों से भरा उनका अपना अनुभव उनके साहित्य की आधारशिला बने। अमरकांत नई कहानी आंदोलन के प्रमुख हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने आधुनिकतावाद के आकर्षण से बचते हुए देशी परिवेश, मध्यवर्गीय जीवन, शोषण, बेरोजगारी, आर्थिक विपन्नता, मानवीय संबंधों के टूटने और पूँजीवादी व्यवस्था की विकृतियों को यथार्थवादी ढंग से चित्रित किया। उनकी प्रमुख कहानियों — 'जिंदगी और जोंक', 'बहादुर', 'इंटरव्यू', 'डेप्यूटी कलेक्टरी', 'दोपहर का भोजन', 'हत्यारे', 'देश के लोग', 'कुहासा', 'निर्वासित' आदि — के माध्यम से लेखक दिखाता है कि अमरकांत का साहित्य आज भी पूर्णत: प्रासंगिक है क्योंकि इनमें वर्णित बेरोजगारी, शोषण, भ्रष्टाचार, अंधविश्वास, परिवारिक विघटन और निम्न-मध्यवर्ग की पीड़ा आज के भारत में भी जीवंत हैं।अमरकांत की विशेषता यह है कि वे केवल बौद्धिक सहानुभूति नहीं दिखाते, बल्कि स्वयं उस दयनीयता और असफलता का हिस्सा बनकर लिखते हैं। निष्कर्षत: शोध-पत्र अमरकांत को समकालीन यथार्थवादी कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित करता है, जिनकी रचनाएँ आज भी समाज की विसंगतियों को उजागर करने और मानवीय संवेदना जगाने में सक्षम हैं।

बीज शब्द- अमरकांत,यथार्थवादी कथा साहित्य,नई कहानी आंदोलन,मध्यवर्गीय जीवन,बेरोजगारी और शोषण,सामाजिक यथार्थ,आर्थिक विपन्नता,मानवीय संबंधों का विघटन,कस्बाई परिवेश,समकालीन प्रासंगिकता,जिंदगी और जोंक,डेप्यूटी कलेक्टरी,हिंदी कहानीकार।

हिन्दी साहित्य के प्रमुख कथाकार अमरकांत उत्तरप्रदेश के बलिया जिले के छोटे से गाँव नगरा में 1 जुलाई 1925 में जन्म हुआ। अमरकांत जी को नगारा के प्राथमिक विध्यालय में उनका नाम लिखा गया। अमरकांत जी के दो नाम थे एक श्रीराम दूसरा अमरनाथ लेकिन उनका पहला नाम ही प्रचलित हुआ। अमरकांत जी के पिताजी मुख्तार थे उनका नाम पहले तहसील मिडल स्कूल , फिर गोवर्नमेंर हाई स्कूल में लिखा दिया गया। अमरकांत जी शर्मीले और मज़ाकी मिज़ाज के इंसान थे, इस तरह की उनके घर का नौकर छबीला जब गाँजा का दम लगाकर आँखें लाल – लाल किए आँगन में पानी भरे घड़े लेकर चलता तो वह उनके पीछे से लंगी लगाकर गिरने की कोशिश करता है। हाँकी ,फूटबाल, गुल्ली डंडा, चिक्का, कबड्डी गोली, लट्टू खेलों का भी अमरकांत को बेहद शोख था।

अमरकांत नौवीं कक्षा में ही उसके मोहल्ले के एक मित्र ने एक हस्तलिखित पत्रिका निकाली। वह मित्र अमरकांत से एक कक्षा आगे पढ़ता था। उस पत्रिका पर उस मित्र का नाम संपादक के रूप में दिया गया था। अमरकांत से भी कुछ लिखने को कहा गया और उन्हों काफी आत्मविश्वास के साथ एक कहानी लिखा था। उस कहानी का शीर्षण था नौजवान पर वह एक अच्छी कहानी थी, एक

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –01-04

परीक्षा में असफलता का भी उनमें अंधविश्वास की ओर ले जाता है। "डिब्बे के सामने पहुंचकर उत्सुक तथा चिंतित मुद्रा में डिब्बे से सिर निकालकर झाँकते हुए नारायण के हाथ में एक पुड़िया देते हुए बोले – " बेटा इसे श्रददा के साथ कहा लेना, भगवान शंकार का प्रसाद है। " शकलदीप बाबू सारा दिन बेटे की सुख – सुविधाएं जुटते रहते, उसे पढ़ाई करते देख खुश होते | फार्म भरने के दिन से लेकर इंटरव्यू तक मंदिरों के देवी – देवताओं से प्रार्थना करते रहे , पर बेटे को डेप्यूटी कलक्टरी नहीं बनना था तो कैसे बन जाता ? पूरी कहानी में अमरकांत ने पूंजीवादी व्यवस्ता की विकृतियों को उघाड़ा है।

डेप्यूटी कॉलेक्टर कहानी विकास के अंतर्विरोध का खाका भी नहीं है और न केवल एक वैचारिक व्यंग्य मात्र है। वह एक विकासशील माने जानेवाले राष्ट्र के राष्ट्रकर्मी की सम्पूर्ण स्थिति है। - सुरेन्द्र चौड़ाहरी

अमरकांत अपनी कहानियों के पत्रों में जीवंतता लाने में सिद्धहस्त हैं। "दोपहर का भोजन" आर्थिक मजबूरियों के कराह की कहानी है। अपनी नौकरी से छूट जाने के बाद चंद्रिका प्रसाद और उनका बड़ा लड़का बेरोजगारी की समस्या से ग्रस्त हैं। कहानी की गृहणी सिद्देश्वरी बहुत ही धैर्यवान महिला है। वह अपने अथक प्रयास से परिवार को टूटने से बचाती रहती है। सिद्देश्वरी के आग्रह करने पर और कसम दिलाने पर यह जानते हुए कि घर में भोजन कम है, चंद्रिका प्रसाद कहते हैं – " रोटी रहने दो , पेट काफी भर चुका है , अन्न और नमकीन चीजों से तबीयत ऊब भी गयी है। तुमने व्यर्थ में कसमधरा दी। खैर , कसम रखने के लिए ले रहा हूँ। गुड़ होगा क्या, ... तो थोड़ा गुड़ का ठंडा रस बनाओं, पीऊँगा। तुम्हारी कसम भी रह जाएगी, जायका भी बदल जाएगा, साथ ही साथ हाजमा भी दारुस्त होगा। हाँ , रोटी खाते – खाते बेजार हो गया हूँ। यहाँ कहकर ठहसा मारकर हँस पड़े। " बाबू चंद्रिका प्रसाद की यह हँसी आर्थिक मजबूरीयों को दर्शाती है। " इस तरह के भय में बहते हुए अनगिनत परिवारों के असंख्या प्राणी, एक दूसरे से अपरिचित आशंकित, वर्तमान के अभावों से पूरी तरह टूटे भविष्य को लेकर दहशत से भरे न केवल पारिवारिक स्तर पर अमरकांत की कहानियाँ व्यक्ति के जीवन की सच्चाई को सामने रखती हैं। राजेन्द्र यादव के अनुसार – "अमरकांत इस अर्थ में सामाजिक जागरूकता का कथाकार नहीं है कि उसने दलितों , शोषितों या पीड़ितों पर, 'हाय तुम लोगों की भी क्या जिंदगी है 'के बौद्धिक विगल से कहानियाँ लिखी हैं। मुझे उसकी ऐसी एक भी कहानी याद नहीं हैं। निम्न मध्यवर्गीय दयनीयता, असफलता और असह्यात के बीच, उस सबका हिस्सा बनते हुए उसने कहानियाँ लिखी। "

दोपहर का भोजन में जिस निर्मम तटहस्तता के साथ एक परिवार के मध्यम से समूचे निनम मध्यवर्ग के पीड़क अभावों का अंकित करने की कोशिश की गई है , अपने समय की मूलधारा को अतिक्रमितकर पाने के कारण ही आज भी वह कहानी इतिहासिक महत्व की दावेदार बनी हुए है। - मधुरेश

अमरकांत की 'देश के लोग' कहानी में का नायक आखिल शहर के एक प्रसिद्द डिग्री कॉलेज में पढ़ाता था। अमरकांत के अनुसार वह एक लोकप्रिय अध्यापक था अर्थात वह अक्सर नए – नए फैशन की पोशक पहनकर आता, शरारती लड़कों से दोस्ताने ढंग से बोलता, पढ़ाते वक्त कवियों तथा लेखकों की प्रेम – लीलाओं का विस्तार पुरक उल्लेख करता है और ग़ैर हाजिर छात्रों की हाजिरी बना देता। " आखिर अपने बगल रिक्शे पर बैठे निम्न वर्गीय व्यक्ति को घृणा करता है उसकी संवेदना बिल्कुल मर गयी मालूम होता है। उसके साथ बैठा व्यक्ति कुछ देर में मर जाता है, इतने गंभीर मरणनसन्न आदमी द्वारा बार – बार कुछ न कुछ पूछे जाने पर वह कोई उत्तर नहीं देता है। "जिंदगी और जोंक" कहानी में एक साधारण व्यक्ति का जीवन का कड़वा सच अंतर्निहित है। जिसको भुक्तभोगी ही अभिव्यक्त कर सकता है। इस तथाकथित सभ्य कहे जाने वाले समाज में गोपाल नाम का अवांछित युवक अपनी एक मित्र की बहन को मन -ही -मन प्यार करता है, अपनी भावनाएं छिपाकर रखता है और एक रात दोस्त घर जाने देरी होती, जब उसके घर डाकुओं का हमला होता है तो वह युवक खबर पाकर वहाँ पहुंचता है डाकुओं से लड़ते – लड़ते अपनी जान दे देता है, दूसरे दिन अखबार निकलता है कि एक नौजवान .... इस प्रकार अमरकांत की लेखनी प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। बाद में उस हस्तलिखित पत्रिका का एक और अंक निकलता है जिसमे अमरकांत और एक कहानी लिखी एक परिवार के लोग अंत में सन्यासी बन जाते है। संभवतः सन्यासी बनने की शुरुआत परिवार के नौजवान लड़के से हुए थी, जिस कारण एक लड़की का प्रेम था , निराशा में लड़का साधु बन जाता है तो उसको खोजने के लिए पहले पिता निकलते है और साधु बन जाते है और उसके बाद माँ साधु बन जाती है कि जो नौजवान कहानियाँ लिखना चाहता था उसमे बड़ी सृजनात्मक प्रतिभा थी। अमरकांत जी की हाई स्कूल के परीक्षा के बाद ही क्रांतिकारियों की तलाश में पुलिस ने कई जगह छापे मारे जिनमे अमरकांत के तीन साथी गिरफ्तार कर लिए गए अमरकांत बाल – बाल बच गए हाई स्कूल की परीक्षा के बाद अमरकांत के कई साथी बिखर गए, दो की तो शादी हो गई थी। सौभाग्य से उसका कुछ सज्जन लोगों के साथ उटना – बैटना हो होगया। इसी समय में महात्मा गांधी तथा पंडित जवाहरलाल नेहरू की आत्मकथाएं भी उन्हें पढ़ने को मिला , इन आत्मकथाओं का अमरकांत पर गहरा असर पड़ा। गांधी जी को अब वहाँ अच्छी तरह जान गया था। अमरकांत को गांधी जी की

सच्चाई सबसे अधिक प्रभावित करती थी। अमरकांत को पंडित नेहरू का अंदाज अलग लगता था, पंडित नेहरू के बारें में वह कई बार विचार किया था की यदि उन्हें राजनीति में न जाना पड़ता तो वह अवश्य महान कवि और लेखक होते, फिर भी नेहरू ने कुछ लिखा है , उसके बल पर उन्होंने साहित्य में अपना स्थान बना लिया | अमरकांत गंभीर एवं क्रांतिकारी विचारों के लोगों से संपर्क बढ़ा और वह परिवार में और उसके बाहर प्राचीन संस्कारों तथा स्तिथियों से लगातार टकराने लगे थे। हाई स्कूल परीक्षा के बाद उसमे तेजी से परिवर्तन हुआ था कि अमरकांत राजनीतिक शिक्षा कोई गंभीर नहीं थी प्रारंभिक खिसम की थी, इसे ही वह अत्यधिक महत्वपूर्ण समझते थे। अमरकांत को जयप्रकाश नारायण से प्रभावित अधिक प्रभावित थे। जयप्रकाश नारायण से प्रभावित होने का एक कारण यहीं था की वह उस पार्टी के सर्वोच्च समझे जाते थे , जीस पार्टी के वह सदस्य थे, जयप्रकाश नारायण का व्यक्तित्व प्रभामंडित था। अमरकांत को आर्थिक समस्याओं के कारण सदा बेचैन रहते थे वह कहीं चैन से बैटना जानता ही नहीं था, उनके प्रेस में भी आर्थिक लढाई होती रहती थी। अमरकांत विभिन्न प्रकार के साहित्यक सम्मेलनों में भाग लेते थे। अमरकांत की कहानियाँ अपने समय परिवेश – समाज का दर्पण है।

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –01-04

अमरकांत खास करके मध्यवर्गीय जीवन के कहानीकार है। मनुष्य के चालाकियाँ , बेईमनिया, मनोविज्ञान को प्रस्तुत करते है। अमरकांत के कहानियाँ एक से बड़के एक है हर तरह की कहानिया हर वर्ग के लोगों की मानसिकता को प्रस्तुत करती है। अमरकांत अपने कहानी के मध्यम से दूसरे वर्ग के समाज, लोग और उनके समय को अपनी कहानी में कथानक बनाते है जो आज भी प्रासंगिक है। अमरकांत कस्बों के कहानीकार है, कस्बोंके लोग गांव और शहर के बीच की कड़ी माना जाता है। यहाँ के लोग अधिकतम श्रमिक और मजदूर ही होते है, उसे इस व्यवस्ता में हर कोई लूटना चाहता है, पढ़ा - लिखा संवेदनशील और प्रगतिशील वर्ग भी इस लूट में शामिल हो जाता है। जिंदगी और जोंक में राजुआ के व्यवस्ता बेहाई के साथ लूट रही है , जो आज के समय में भी हमे दिखाई देता है, दोपहर का भोजन में रामचन्द्र जो पिछले साल ही इन्टर पास किया है पास के एक स्थानीय दैनिक समाचार पत्र में प्रूफ़रीडींग सीखने जाता है।

नई कहानी के लेखकों में अमरकांत का विशिष्ट स्थान है। विशेषता इस बात में है कि इन्होंने कुछ बहुत अच्छी कहानियाँ दी इस बात में भी है कि आधुनितवाद के आकर्षक के दौर में अमरकांत कुछ अन्य रचनाकार अपने देशी परिवेश से जुड़े रहे है और अवधारणाओं के स्थान पर अपने उस परिवेश से इनका लगाव रहा जिसमें ये अवधारनाएं चरितार्थ होती है। अमरकांत कि कहानियों में वर्तमान स्तरीतियों की निकटता है। इसलिए इनकी कहानी संसार के किसी एक वर्ग तक सीमित ना रहकर व्यापक हो उठती।

अमरकांत की प्रमुख कहनी "जिंदगी और जोंक" में राजुआ के लिए छोटे छोटे कामों की कमि नहीं थीं इस कहनी में बताया गया है की कमजोर, लाचार, गरीब, व्यक्ति को समाज रगड़ डालने के लिए तैयार है। अमरकांत की एक मशहूर कहानी है, "बहादुर" कहानी मे का मुख्य पात्र बहादुर है वहीं मुख्य नायक भी है ,जो घर का नौकर है। लोग उससे जमकर काम लेते है और बदले में अपने इच्छानुसार ताना देते है ,बहुत मेहनत करने के बाद बहादुर के ऊपर चोरी का इल्जाम लगाकर उसे पीटा गया है अंततः वह भाग जाता है और अमरकांत की कहानियाँ साधारण व्यक्ति या परिवारों की समसएं आज भी प्रासंगिक है।

अमरकांत की 'इंटरव्यू' कहानी में उच्चवर्गीय अधिकारियों द्वारा मध्यवर्गीय छात्रों का इंटरव्यू के नाम पर मजाक करना इसी शोषण वृत्ति का परिचायक है। पूरा इंटरव्यू लिए बिना योग्य व्यक्ति के चुनाव की घोषणा हो जाती है। इंटरव्यू में न चुने जाने वाले बेरोज़गार युवाओं की हताश इन शब्दों में दिखाई पड़ती है । ''मंत्री तक रिश्वत खाने लगे हैं, फिर इन छोटे – मोटे अफसरों की क्या बात "। भ्रष्टचार में हमेशा बेरोज़गार युवकों का शोषण होता है जो आज के वर्तमान समय मे हमे देखने को मिलता है।

'डेप्यूटी कलेक्टरी' कहानी आर्थिक समस्या को चित्रित करती है जो एक साधारण परिवन अपनी संतान के प्रति उच्च अफसर बनने की इच्छा रखता है, वह परिणाम आने पर डेप्यूटी कॉलेक्टर का चयन न होने पर उस परिवार में छाई हुई हताश और निराश को इस कहानी के मध्यम से प्रसृत किया है। " लेकिन इधर देढ़ दो साल से मुखतारी की गाड़ी उनके चलाये न चलती थी। बुढ़ौती के कारण अब उनकी आवाज़ में न वह तड़प रह गई थी, ना शरीर में वह ताकत और न चाल में वह अकड़ , इसलिए मुवक्किल उनके यहाँ काम ही पहुँचते। कुछ तो आकर ही भड़क जाते। इस हालत में वह राम का नाम ले कचहरी जाते , जिसे दोनों जून चौक - चूल्हा जल जाता। इसी आर्थिक समस्या के बीच शकलदीप बाबू उधार लेकर अपने बेटे नारायण को 'डेप्यूटी कालेक्टरी ' का फार्म भरवाते हैं। निम्न मध्यवर्गीय शकलदीप बाबू असफलता की आशंका के निवारण हेतु मंदिर में हर दिन जाकर पूजा – पाठ करने लगते हैं।

व्यक्ति प्रवेश करता है, जिसे राजुआ नाम दे दिया जाता है। उसकी सेवाओं कि सबकी आवश्यकता है, लेकिन उसकी अपनी मूलभूत और छोटी से छोटी दैनिक अवश्यकताएं दूसरों की इच्छा पर निर्भर है। "वह स्तिथि के अनुसार रस कई प्रकार से ले सकता है। लेकिन इसमें राजुआ को जिंदगी की अमानवीयता का अहसास कम नहीं होता, बल्कि तीव्रतर हो उठता है। राजुआ दाल भात रोटी खाता है, इस सबसे उसकी दुरावस्था और निखर उठती है। राजुआ लगभाग पशु की जिंदगी निभाता है। उसके क्रिया – कलाप देखिए तो कभी कुत्ता, कभी गधा और कभी बैल मालूम पड़ता है। पशु कभी आत्महत्या नहीं करता। शरीर की चेतना तक सीमित रखने वाला पशु अपनी सबसे बड़ी और एक मात्र संपत्ति नहीं छोड़ना चाहता। लेकिन राजुआ मनुष्य है जो पशु जैसा है, उसका पशु जीवन उस व्यवस्था पर तीव्र भवात्माक आघात करता है, जो अपने को मानवीय समझती है। सहनशीलता की पराकाष्ठा पर पहुँचा हुआ राजुआ किसी बात का बुरा नहीं मानता है। इन विकट और असहनीय परिस्थितियों में परिहास का मौका ढूंढ लेता है, प्रसन्न रहता है, लेकिन मार खाते रहना और काम करते रहना उसकी नियति है। रोटी के मोहताज मध्यवर्गीय जीवन में रोजमर्रा की इन स्थितियों का साक्षात्कार अमरकांत की कहानियों को वास्तविकता के अत्यंत करीब कर दिया है, जो आज कि वर्तमान स्तिथि में भी हमे एक नौकर काम करने पर भी उसको तनखाव ठीक प्रकार से नहीं मिलती है।

'हत्यारे' कहानी आजादी के बाद के दशक में मोहभंग के अवसादों से उत्पन्न हुई है। हत्यारे का सम्पूर्ण कथानक एक चलता फिरता संसार है जो क्वार की शाम के सुंदर से मौसम से शुरू होता है, और रात का अंधेरा होते – होते खत्म हो जाता है हत्यारे कहानी हमारे समाज में बिगड़ती व्यवस्ता के लिए एक चेतावनी भी थी, परंतु वह चेतावनी आज साठ साल बाद भी हमारी व्यवस्ता तक नहीं पहुँच पायी है। यही कारण है कि शिक्षित बेरोज़गार केवल विशविध्यालयों से ही नहीं बल्कि हर वर्ग और हर पेशे से निकल रहे हैं, जो समाज के लिए और सामाजिक व्यवस्था के हत्यारे साबित हो रहे है, इस कहानी के माध्यम से अमरकांत बेरोजगारी के साथ – साथ अनचाहे भी अपराध प्रवृत्ति के हो जाते है।

घृणा और भय के अलावा ये हत्यारे दयनीय है, निश्चित बेरोज़गार हैं। आज का भारत अमरकांत के हत्यारे के भर से फटा जा रहा है देश के दुर्भाग्य को यह कहानी अचूक तौर पर उजागर करती है। बेकारी के कारण समाज में अन्य दूसरी समस्याएं भी पैदा हो रही है । परिवार में तनाव का एक कारण बेकारी और ग़रीबी भी है। बेकार के कारण समाज में अन्य दूसरी समसएं भी पैदा होती है, जीवन में तनाव का एक कारण बेकारी और गरीबी भी एक हिस्सा है। अकाल के समय मानवीय संबंध किस तरह बिखर जाते हैं इसका चित्रण भी अमरकांत ने 'कुहासा' और 'निर्वासित ' कहानियों में किया है। एक पिता अपने पुत्र को घर से इसलिए

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –01-04

निकाल देता है कि वह उसे दो वक्त की रोटी नहीं दे सकता है। इस काहनी के अंतर्गत आर्थिक संकट किस प्रकार परिवार को प्रभावित करता है अमरकांत ने दर्शाया हैं और आर्थिक स्थिति का व्यक्ति के संबंध पर पड़ने वाले प्रभाव को अनेक नए कहानिकारों ने अपनी कहानियों में चित्रित किया है। अमरकांत ने भी इस विषय पर अपनी लेखनी चलाई। लेकिन वे केवल आर्थिक संकट में मानवीय संबंधों के टूटने का ही चित्रण नहीं करते बल्कि यह भी दिखाते है कि व्यक्ति थोड़ा सा भी आर्थिक आधार पाकर पुनः अपने पारिवारिक संबंधों को जोड़ देता है। 'घर' कहानी में आर्थिक विषन्नता के कारण पिता द्वारा क्रोध में विनय को घर से चले जाने को कहने पर विनय चला जाता है लेकिन हाथ में कुछ पैसे आते ही उसकी सारी कटुता दूर हो जाती है। वह अपने परिवार के बारे में सोंच ने लगता है।

हत्यारे में अमरकांत की दृष्टि सामाजिक पीड़ा की बहुत मार्मिक व्यंजना करती है –

विश्वनाथ त्रिपाठी—विजेता एक अलग प्रकार की कहानी है इस कहानी में यह दिखाया है कि दो मित्रों की आपसी विद्वेष के कारण मित्र से बदला लेने की भावना किस प्रकार एक सीधी – सादी स्त्री को प्राण गवाने पड़ते है। इस तरह अमरकांत ने व्यक्ति का जीवन समाज में व्याप्त बेबसी निर्धनता, शोषण, अंधविश्वास इत्यादि का चित्रण किया है। अकाल के समय मानवीय संबंध किस तरह बिखर जाते हैं इसका चित्रण भी अमरकांत ने 'कुहासा' और 'निर्वासित' कहानियों में किया गया है |
गया है | एक पिता अपने पुत्र को घर से इसलिए निकाल देता है, कि वह उसे दो वक्त की रोटी नहीं दे सकता है। "बारिश न होने से खेती चौपट हो गई थी और गाँव भर – मज़दरी का कोई काम भी नहीं था। ग़रीब लोग दाने – दाने को तरसते रहते है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है की अमरकांत की कहानियों में सामाजिक व्यवस्ता की विसंगतियों एवं टकराते हुए मानव जीवन की सूक्ष्मता से चित्रण करते है। समाज को सुखदाई बनाने के लिए व्यक्ति की इच्छा – अनिच्छा के अनुसार जीवन के निर्णय लेना अनिवार्य है। अमरकांत ने स्वयं से जूझते दिशाहीन, दिग्भ्रमित ,युवा को अपना कहानियों का मध्यम बनाया है। जहाँ युवा पीड़ी अपने सपनों का निर्माण करने आती है , भविष्य का निर्धारण भी इसी परिवेश में करती है यह परिवेश उनमे भटकाव पैदा करता है नए रास्ते की तलाश व स्वयं के पहचान की राह भी दिखाती है,आज की वर्तमान स्तिथि में इस प्रकार की समस्या दिखाई पड़ती है। अमरकांत की लेखनी समय और परिवेश के यथार्थ पर रहा। अमरकांत की कहानियों में व्यक्ति के जीवन में वास्तविक यथार्थ को महत्व देने वाले कथाकार के रूप में अमरकांत अग्रगण्य है। अमरकांत की कहानियाँ समकालीन जीवन परिदृश्य और प्रसंगों के बीच आशा और आकांक्षाओं का एक इनकी कहानियों का एक अपना विशिष्ट मूल्य है।

******

संदर्भ - ग्रंध सूची :-

1. अमरकांत एक मूल्यांकन -सं -रवींद्र कालिया -सामयिक बुक्स -नई दिल्ली -2018 पेज नं -36
2. कुछ कहानियाँ कुछ विचार – विश्वनाथ त्रिपाठी -राज कमल प्रकशन -नई दिल्ली -2015 पेज नं – 12
3. नई कहानी कि भूमक – कमलेश्वर – राजकमल प्रकाशन -नई दिल्ली -2020 पेज नं -26
4. कहानी नई कहानी – नामवर सिंह – लोकभारती प्रकाशन -2021-प 155
5. एक दुनिया समानांतर -सं -राजेन्द्र यादव -राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड -2023-दिल्ली जगतपुरी – पेज नं – 71
6. एक दुनिया समानांतर -सं -राजेन्द्र यादव -राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड -2023-दिल्ली जगतपुरी – पेज नं – 75
7. 21 श्रेष्ट कहनियाँ – अमरकांत -डायमंड बुक्स -नई दिल्ली -पेज नं 07
8. 21 श्रेष्ट कहनियाँ – अमरकांत -डायमंड बुक्स -नई दिल्ली -पेज नं 72
9. बनास जन -शताब्दी स्मरण : अमरकांत जुलाई -सितंबर 2025 पेज नं -94
10. बनास जन -शताब्दी स्मरण : अमरकांत जुलाई -सितंबर 2025 पेज नं -127